RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-09
September-2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]
DOI: https://doi.org/10.31305/rrijm.2020.v05.i09.013

साहित्य क्षेत्र में 'गुप्त काल' की उपलब्धियाँ : एक संक्षिप्त अध्ययन

सत्यजीत कुमार

गेस्ट फैकल्टी (NCWEB) हंसराज कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय

भारतीय इतिहास में गुप्तकाल एक विशेष महत्त्व रखता है। राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान साम्राज्यवादी सत्ता के विरोध में जो राष्ट्रवादी इतिहास लिखा जा रहा था, उनमें गुप्तकाल को स्वर्णयुग के रूप में देखने का प्रयास किया गया। इनके द्वारा स्वर्णयुग के पक्ष में जो तर्क रखे गए उनमें उपमहाद्वीप के बड़े हिस्से का उनके अधीन राजनीतिक एकीकरण गुप्तों का केंद्रीकृत प्रशासन, संस्कृत साहित्य की उनके अधीन अभूतपूर्व समृद्धि, प्रस्तरीय मूर्ति कला और स्थापत्य का उद्भव जैसे बिंदुओं को प्रस्तावित किया जा रहा था। और उनका मानना था कि इस प्रकार के विकास के पीछे आर्थिक समृद्धि और सामाजिक सौहार्द्र की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी।

300–600 ई. के काल को संस्कृत साहित्य का 'क्लासिकी युग' कहा जाता है। इसका कारण यह है कि इस अवधि में संस्कृत साहित्य में सर्वोच्च मानदंड स्थापित किया गया। संस्कृत भाषा ने गद्य और पद्य दोनों में शास्त्र सम्मत स्वरूप को ग्रहण किया। पहली शताब्दी में अश्वघोष संस्कृत भाषा के पहले कवि थे। इस काल में (300 ई. – 600 ई.) संस्कृत साहित्य में गद्य विधा में लेखन के प्रयोग की लोकप्रियता काफी बढ़ी। इस काल में जो भी शाही प्रशस्तियाँ लिखी गई, इन राजकीय अभिलेखों की भाषा प्राकृत के स्थान पर पूर्ण रूप से संस्कृत हो गई। नाट्यशास्त्र में एक रोचक सिद्धांत संस्कृत के संबंध में दिया गया है कि संस्कृत नाटकों में उच्च चरित्रों यथा सम्राट, मंत्री इत्यादि को संस्कृत भाषा तथा निम्नतर चरित्रों को स्त्री तथा नौकरों को सामान्यतः प्रकृत भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

हालांकि, इन शताब्दियों के साहितय की अद्वितीय रचनाओं के कालजयी लेखकों के विषय में हम बहुत कम जानते हैं। उनके वास्तविक जीवन चरित्र के वर्णन के स्थान पर उनसे जुड़ी किवदंतियाँ अधिक प्रचलित है। वे कब और कहाँ रहते थे, इसके विषय में भी कई भ्रांतियाँ हैं। उदाहरण के लिए–शुद्रक को एक मान्यता के अनुसार, विदिशा का राजा मानते हैं जबकि दूसरी मान्यता यह है कि यह अभीर जनजाति का एक शासक था।

इस काल में साहित्य लेखन को चरमोत्कर्ष पर ले जाने वाले कुछ महत्त्वपूर्ण रचयिता को हमने चिन्हित करने का प्रयास इस लेख में करने की कोशिश की है। जैसे–

कालिदास कृत साहित्य

कालिदास निश्चित रूप से इस काल के श्रेष्ठतम नाटककार थे। अभिज्ञानशांकुतल, माल्लिवकाग्निमित्र विक्रमोवर्शीय इनके प्रमुख नाटक हैं। रघुवंश, कुमारसंभव, मेघदूत छन्दबद्ध काव्यात्मक रचनाएं है। इन सभी को संस्कृत साहित्य का अनुमप धरोहर माना जाता है। इन्होने प्रणय के सौंदर्यबोध का पूर्ण रूप से वर्णन किया है। इनकी रचनाओं में कई स्थानों पर हास्य और व्यंग्य का पुट भी देखने को मिलता है। इनकी शैली को कई बार वैदर्भी शैली के नाम से जानते हैं। बाद में बाणभट्ट और दण्डिन जैसे महान लेखकों ने कालिदास की रचनाओं के माधुर्य की बहुत प्रशंसा की गई है। हालांकि अपने समय के कई लेखकों के द्वारा इनकी आलोचना भी की है। उदाहरण के लिए, काव्य प्रकाश के लेखक ममत्त ने 'कुमार संभव' के आठवें सर्ग में शिव और पार्वती के प्रणय को अनैतिक साहित्य के श्रेणी में रखा है। कालिदास की कृति मेघदूत सौ से कुछ अधिक ललित श्लोकों का एक गीतिकाव्य है। जिसमें उत्तरी पर्वतों के पार अपनी विरहाकुल पत्नी को प्रेमातुर यक्ष ने संदेश दिया है। रघुवंश में राम की चतुर्दिक विजयों का वर्णन किया गया है और संभव है कि उनमें गुप्त राजाओं की भी कुछ जीतों का उल्लेख किया गया हो। कुमार संभव में शिव और पार्वती के प्रेम प्रसंग कामक्रीड़ा ओर उनके पुत्र स्कंद के जन्म का वर्णन है। ऋतुसंहार में श्रृंगार के संदर्भ में छह ऋतुओं का वर्णन किया गया है। उनकी सर्वाधिक विख्यात कृति 'अभिज्ञानशांकुन्तलम' का विषय दुष्यंत तथा शंकुतला का पुनर्मिलन है; यह प्रारंभिक नाट्यशास्त्र और भारतीय साहित्य की सर्वोच्च कृति है।

शूद्रक कृत 'मृच्छकटिकम'

मृच्छकटिकम् (अर्थात् मिट्टी का खिलौना या मिट्टी की गाड़ी) संस्कृत नाट्य साहित्य में सबसे अधिक लोकप्रिय रूपक है, इसमें दस अंक हैं। इसके रचनाकार महाराज शूद्रक है। नाटक की पृष्ठभूमि पाटलिपुत्र है।

मृच्छकटिकम् की कथावस्तु कवि प्रतिभा से प्रसूत है। उज्जयिनी का निवासी सार्थवाह विप्रवर चारूदत्त इस प्रकरण का नायक है और दाखनिता के कुल में उत्पन्न वसंतसेना नायिका है। इसकी कथावस्तु तत्कालीन समाज का पूर्ण रूप से प्रतिनिधित्व करती है। यह केवल व्यक्तिगत विषय पर ही नहीं अपितु इस युग की शासन व्यवस्था एवं राज्य स्थिति पर

RRIJM 2015, All Rights Reserved

भी प्रचुर प्रकाश डालता है। साथ ही साथ वह नागरिक जीवन का भी यथावत् चित्र अंकित करता है। इसमें नगर की साज सजावट, वारांगनाओं का व्यवहार, दास प्रथा, द्युत क्रीड़ा, विट की धुर्तता, चौरकर्म, न्यायालय में न्यायनिर्णय की व्यवस्था, अवांछित राजा के प्रति प्रजा के द्रोह एवं जनमत के प्रभुत्व का सामाजिक स्वरूप भली भांति चित्रित किया गया है।

मृच्छकटिकम में दस अंक हैं–

(i) पहला अंक – अलंकार न्यास
(ii) दूसरा अंक – द्यूतकार संवाहक
(iii) तीसरा अंक – संधिच्छेद
(iv) चौथा अंक – मदनिका – शर्विलक
(v) पांचवा अंक – दुर्दिन
(vi) छठा अंक – प्रवहणविपर्यय
(vii) सातवां अंक – आर्यकारहरण
(viii) आठवां अंक – वसंत सेना मोटन
(ix) नवाँ अंक – व्यवहार
(x) दसवाँ अंक – संहार

महाकवि मारविकृत 'किरातार्जुनीय'

किरातार्जुनीय (किरात और अर्जुन की कथा) महाकवि भारवि द्वारा रचित महाकाव्य है जिसे संस्कृत साहित्य में महाकाव्यों वृहत्रयी में स्थान प्राप्त है। महाभारत में वर्णित किरातवेशी शिव के साथ अर्जुन के युद्ध लघुकथा को आधार बनाकर कवि ने राजनीति, धर्मनीति, कूटनीति समाजनीति, युद्धनीति का मनोरम वर्णन किया है।

संस्कृत में इस महाकाव्य की लगभग 37 टीकाएँ हुई है जिसमें मल्लिनाथ की टीका घंटापथ सर्वश्रेष्ठ हैं सन् 1912 में कार्ल–कैपलर ने हारवर्ड ओरिएंटल सीरीज के अंतर्गत कीरातार्जुनीयम का जर्मन अनुवाद किया।

अमरसिंह कृत अमरकोष

अमरकोष में धातुओं के विषय में जानकारी दी गई हैं इस ग्रंथ में सूती वस्त्र उद्योग से जुड़े कई शब्दों का उल्लेख हुआ है। अमरकोष श्लोक रूप में रचित हैं इसमें तीन कांड है। स्वर्गादिकाण्ड, मूवर्गादिकाण्ड और सामान्यादिकाण्ड अमरकोष पर कई सारी टीकाएं लिखी गई है जैसे–

1. अमरकोशोद्घाटन (क्षीरस्वामी)
2. टीका सर्वस्व (सर्वानन्द)
3. कामधेनु (सुभूतिचंद)
4. रामाश्रमी (भानुजि दिक्षित)

भरत कृत नाट्यशास्त्र

इस युग में काव्य साहित्य के साथ–साथ काव्य क्रियाकल्प तथा नाट्यशास्त्र जैसी रचनाएँ लिखी गई जो काव्यपरंपरा या नाट्यपरंपरा का सैद्धांतिक विश्लेषण है। अपनी विधाओं के ये मानक ग्रंथ हैं।

दैनिक जीवन की समस्याओं, संघर्षों और त्रासदियों से ध्यान हटाने और आनंद की प्राप्ति की उद्देश्य से क्रीड़ानीयक के रूप में नाटय का सृजन हुआ। इस ग्रंथ के अनुसार, ब्रह्म ने पहली बार नाट्यशास्त्र को पांचवें वेद के रूप में भरत नामक ऋषि को सौंपा ताकि कुत्सित वासनाओं से संसार की रक्षा की जा सके।

नाट्यशास्त्र एक समेकित कृति है जिसमें संभवतः वैसी सामग्रियों का संकलन किया गया है जो सदियों से कलाकारों के बीच लोकप्रिय हो रही होंगी। यह भी संभव है कि पहले ये श्रुति परंपरा के रूप में उपलब्ध रहा होगा और बाद में इसे गद्यात्मक स्वरूप प्रदान किया गया। नाट्यशास्त्र पर अभिनवगुप्त के द्वारा टीका लिखी गई है।

विष्णुशर्मा कृत पंचतंत्र

पंचतंत्र निदर्शन शास्त्र का एक उदाहरण है। निदर्शन एक ऐसी विधा है जिसके अंतर्गत सोदाहरण यह बतलाया जाता है कि क्या नीति संभव है और क्या नहीं। हालांकि इस कृति रचनात्मक ओर लेखक के बारे में कोई विश्वसनीय जानकारी उपलब्ध नहीं है, लेकिन सामान्य तौर पर ऐसा माना जाता है पंचतंत्र की कथाओं की रचना विष्णुशर्मा नामक एक ऋषि ने की थी। इन कथाओं में तीन राजकुमारों को नीति और राज्यशास्त्र का ज्ञान दिया गया है। इन राजकुमारों के नाम के साथ शक्ति उपसर्ग जुड़ा हुआ है, जिसके आधार पर कई लोग अनुमान लगाते हैं कि यह वाकाटक साम्राज्य से संबंध रहा होगा। इस ग्रंथ के पाँच खण्ड हैं जिनमें संधि विग्रह, हितों की दृष्टि से संधि विच्छेद, संधि करना, युद्ध की घोषणा करना, मुर्खों से दूर रहना और बिना योजना के क्रिया करने के दुष्परिणामों से संबंधित कई रोचक कथाओं का वर्णन है। पंचतंत्र की अधिकांश कथाएँ व्यंग्यात्मक शैली में लिखी गई है, जिसमें पशुओं की भूमिका अहम होती है। पंचतंत्र एक गद्यात्मक रचना है, लेकिन बीच–बीच में कुछ अत्यंत लोकप्रिय श्लोक भी पाए जाते हैं।

वात्स्यायन कृत 'कामसूत्र'

कामसूत्र महर्षि वात्स्यायन द्वारा रचित भारत का एक प्राचीन कामशास्त्र ग्रंथ है। अर्थ के क्षेत्र में जो स्थान कौटिलय के अर्थशास्त्र का है काम के क्षेत्र में वही स्थान कामसूत्र का है।

वात्स्यायन के कामसूत्र के विषय में लोकप्रिय धारणा यह है कि यह ग्रंथ कामुकता एवं यौन से जुड़ा हुआ है। दरअसल यह एक जटिल रचना है जो इंद्रीयनिष्ठ आनंद पर केंद्रित हैं इसके सात खंड है– सामान्य व्यवहार और नियम, विषम लैंगिक संयोग, वधु प्राप्ति, एक पत्नी के दायित्व, दूसरे पुरुषों के पत्नी के साथ संयोग तथा निपुण संभोग की सफलता के लिए गुप्त मंत्र–तंत्र। जब हम इस ग्रंथ को इसकी

संपूर्णता में देखते है तब कामसूत्र में प्रतिबिंबित सामाजिक आदर्श कई मायने में धर्मशास्त्रीय ग्रंथों से बहुत मेल खाता है।

वात्स्यायन के अनुसार, एक योग्य पत्नी अपने पति की भली प्रकार सेवा करती है घर को साफ–सुथरा रखती है और अपने रूप सज्जा पर ध्यान देती हैं इसके अतिरिक्त वह घर के परिचारकों और घर के वित्तीय मामलों को काफी कुशलता से नियंत्रित करती है।

कामसूत्र यह मानता है कि किसी पुरुष को संतति, प्रसिद्धि तथा सामाजिक स्वीकृति तभी मिलती है जब वह अपने वर्ण के किसी कुवारी कन्या से धार्मिक अनुष्ठानों के अनुरूप विवाह करे। यह उच्च वर्गों के महिलाओं के साथ तथा विवाहिताओं के साथ संभोग संबंधों को निषिद्ध करता है, लेकिन दूसरे स्थान पर इसे निम्न वर्णों के महिलाओं के साथ शुद्ध रूप से आनंद की प्राप्ति के लिए संभोग संबंधो को स्थापित करने में कोई आपत्ति नहीं है।

दार्शनिक साहित्य

इस युग के दार्शनिक ग्रंथों में सभी सम्प्रदायों के बीच चल रही बौद्धिक प्रतिस्पर्धा का निरूपण होता हैं इस काल में ब्रह्मसूत्र, योगसूत्र, न्यायसूत्र के माध्यम से बौद्ध और जैन विचारधाराओं को ब्राह्मणवाद ने एक बार फिर से चुनौती दी। इस काल में लिखी गई रचना सांख्यकारिका के लेखक ईश्वर कृष्ण है, जिन्होंने सांख्य दर्शन का विशुद्ध विश्लेषण किया है। पातंजलि के योगसूत्र पर इस काल में व्यास की टीका उपलब्ध है। पक्षिल स्वामी वात्स्यायन नाम के विद्वान न्याय दर्शन से संबद्ध थे जो चौथी शताब्दी के बीच के काल में थे। प्रशस्तपाद की रचना पदार्थ धर्मसंग्रह तथा कन्नड़ की रचना वैशेषिक सूत्र का काल पाँचवीं शताब्दी बताया जाता है।

गणित और खगोल शास्त्र

भारत के पहले खगोलशास्त्री आर्यभट्ट–1 थे, जिन्होंने दो ग्रंथ लिखे– पहला, आर्यभट्टीय जो ग्रंथ आज भी हमारे पास उपलब्ध है और यह मुख्य रूप से गणित तथा खगोलशास्त्र पर लिखा गया है और दूसरा आर्यभट्ट सिद्धांत जिसके विषय में हम अन्य लेखकों के द्वारा दिये गये उद्धरणों से जानते हैं। कुछ मान्यताओं से आर्यभट्ट को अश्मक क्षेत्र का निवासी बताया गया है। वही आर्यभट्टीय में लिखे गए एक कथन से आधार से यह ज्ञात होता है कि ये कुसुमपुर (पाटलिपुत्र) के निवासी थे।

आर्यभट्ट का ब्रह्मांड के विषय में पृथ्वी केंद्रित दृष्टिकोण था। उनका मानना था कि सभी ग्रह पृथ्वी के चारो ओर वृताकार परिधि में चक्कर काटते हैं। वे पहले खगोलशास्त्री थे, जिसने ग्रहण के विषय में वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत की। उन्होंने एक वर्ष की अवधि का सटीक निर्धारण किया।

वाराहमिहिर छठी शताब्दी के एक प्रसिद्ध ज्योतिषी खगोलशास्त्री और गणितज्ञ थे जो अवंति (पश्चिमी मालवा) के निवासी थे। पंचसिद्धातिका की रचना इन्होंने ही की थी। उनकी वृहतसंहिता एक प्रकार का विश्वकोष है जिसमें खगोलशास्त्र के अतिरिक्त अन्य कई महत्वपूर्ण धातुओं और रत्नों का मूल्य निकालना बिना ऋतु के वृक्षों में फलों का विकास करना, पशुओं के अच्छे नस्लों को विकसित करना जैसे विषयों की चर्चा है।

ब्रह्मस्फुट सिद्धांत तथा खंडखाद्यक छठी–सातवीं सदी की रचना है जिसे ब्रह्मगुप्त द्वारा लिखी गई है।

चिकित्सा शास्त्र

चरक और शुश्रुत संहिता चिकित्साशास्त्र और आयुर्वेद के प्राचीनतम उपलब्ध ग्रंथ है। देवी प्रसाद चटोपाध्याय ने यह तर्क दिया है कि प्रारंभिक चरण में चिकत्साशास्त्र से संबंधित साहित्य और धार्मिक व्यवहारवादी परंपरा का अंग रहा होगा जो कालांतर में किसी समय ब्राह्मणवादी शास्त्र का अंग बन गया।

चरक संहिता के अंतर्गत कई कालानुक्रम स्तरों को चिन्हित किया जा सकता है बोअर पांडुलिपि कहीं जाने वाली पुरालेख में चरक संहिता का अधिकांश साहित्य भी मिलता है जिससे यह पता चलता है कि पाँचवीं शताब्दी तक चरक एक चिरपरिचित हस्ताक्षर रहे होंगे। इस पांडुलिपि के प्रत्येक अध्याय के अंत में दी गई पुस्तिका पर चरक का नाम उद्धृत हैं चरक संहिता को 120 अध्यायों में तथा आठ खंडों में बांटा गया है। इसका सूत्र ग्रंथ औषधि ज्ञान से संबंधित है। इसके अतिरिक्त इसमें भोज्य सामग्री, कुछ बीमारी और उसका उपचार, अप्रमाणिक चिकित्सक तथा कुछ दर्शन संबंधित मुद्दे संकलित है। 'निदान' नामक दूसरे खंड में आठ महत्वपूर्ण बीमारियों के कारण की व्याख्या की गई है। 'विमान' नामक तीसरे खंड में स्वाद, पौष्टिकता, चिकित्सीय जाँच और चिकित्सीय अध्ययन संकलित है। शरीर नामक चौथे खंड में मानव का शरीर विज्ञान, भ्रूण विज्ञान तथा दर्शन सम्मिलित है।

सुश्रुत संहिता के अधीन भी कई कालानुक्रमिक स्तर विद्यमान है। इसका मूल पाठ्य शल्य चिकित्सा से संबंधित था। सुश्रुत संहिता शल्य चिकित्सा के विषय में बतलाते हुए यह कहते हैं कि प्राचीन भारत में विभिन्न शल्य चिकित्सा की तकनीक और सूचनाएं विकसित थी। सुश्रुत ने एक शल्य चिकित्सक के प्रशिक्षण के विषय में काफी कुछ कहा है और उसके द्वारा उपयोग में लाए जाने वाले उपकरणों का भी विवरण दिया है।

निष्कर्षतः हम देख सकते हैं कि 300–600 ई. के काल के संबंध में की गई व्याख्याएँ ऐतिहासिक विरोधाभासों से परिपूर्ण है। क्योंकि जहाँ एक ओर इसे स्वर्णयुग माना जाता है, जो चहुँमुखी विकास और समृद्धि का काल था वहीं दूसरी ओर इसे राजनीतिक विकेंद्रीकरण तथा आर्थिक पतन का काल भी

RRIJM 2015, All Rights Reserved

माना जाता हैं इसक लाके स्थापत्य और कला में मूर्ति कला की लोकप्रियता और धर्मों का व्यापक संस्थानीकरण प्रतिबिंबित होता है। संस्कृत साहित्य और प्रस्तरीय प्रतिभाशास्त्र की यह चरमोन्नति का काल था। खगोलशास्त्र, गणित, चिकित्साशास्त्र जैसे ग्रंथों से इस काल में ज्ञान में महत्वपूर्ण इजाफा हो रहा था। साहित्य की मदद से इस काल के बारे में हमें अत्यंत महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है जो ऐतिहासिक दृष्टिकोण से हमें काफी मदद करती है।

संदर्भ सूची

[1]. सिंह, उपिंदर, प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत का इतिहास, पीयरसन पब्लिकेशन, पृ. 580–585
[2]. झा. डी.एन., प्राचीन भारत का इतिहास विविध आयाम, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, पृ. 183
[3]. श्री धरन, ई., इतिहासलेखन, ओरियंट, ब्लैकस्वान
[4]. प्रमोद, काले, द थियेटरिक यूनिवर्स, पोपुलर प्रकाशन
[5]. इनसाइक्लोपीडिया ऑफ इंडियन लिटरेचर, भाग–1

RRIJM 2015, All Rights Reserved